राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • मंगलवार • 24 जनवरी • 2023

एसए ने 1936 से अब तक राई-सरसों की 33 प्रजाति कीं विकसित

पुर (एसएएनबी)। सब्जी की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के ाकों ने कई उत्कृष्ट शोध पत्र किये।

म्मेलन में राई, सरसों, त्रीन, सूरजमुखी, अरंडी, ी, नाइजर व तिलहन वृक्षों पर देश के वैज्ञानिकों ने अपने त्र रखे व नवीन अनुसंधानों की ारी दी। सीएसए के प्रो.महक ने राई-सरसों तेल पर विस्तृत ान दिया। उन्होंने बताया कि ए द्वारा 1936 से लेकर अब ाई-सरसों की 33 प्रजातियों को

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे सीएसए वैज्ञानिक।

विकास किया गया है, जिससे किसान लाभान्वित हो रहे हैं। सीएसए के कीट वैज्ञानिक डॉ.डीके सिंह व प्रभाकर तिवारी ने भी सम्मेनल में भागीदारी की।

हैदराबाद में 21 जनवरी को संपन्न पांच दिवसीय सम्मेलन का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, इंडियन सोसाइटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद व भारतीय सोयावीन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। सम्मेलन में सब्जी खाद्यान्न तेल की उपलब्धता व तेलों की गुणवत्ता बढ़ाने एवं तेलों के कम प्रयोग विस्तृत चर्चा की गई।

सब्जी तेलों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉक्टर महक सिंह ने बताया कि सब्जी तेलों की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2020-23 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इंडियन सोसायटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद एवं भारतीय संस्थान सोयाबीन इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 जनवरी से 21 जनवरी- 2023 तक भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद (तेलंगाना) में आयोजित की गई। इस पांच दिवसीय सम्मेलन में 18 विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें राई, सरसों,सोयाबीन,सूरजमुखी, अंडी, अलसी, नाइजर एवं तिलहन वृक्षों पर देश-विदेश के जाती आप हमने प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतिभाग किया

>> सीएसए के वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए उत्कृष्ट शोध पत्र

विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ महक सिंह प्रोजेक्ट लीडर राई-सरसों एवं अन्य देश एवं विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा दल के सदस्य के रूप में इस सम्मेलन में प्रतिभाग कर राई सरसों तेल पर विस्तृत चर्चा की गई महक सिंह द्वारा बताया गया कि प्रथम प्रजाति आरती 11 वर्ष 1936 में कानपुर संस्थान द्वारा विकसित की गई तथा वर्ष 1936 से लेकर वर्ष 2023 तक 33 जातियों का विश्वविद्यालय द्वारा विकास कर भारत सरकार से जनक बीज उत्पादन हेतु उचित कराया जा चुका है इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिक डॉ डीके सिंह एवं तिवारी द्वारा प्रभाकर अपना प्रस्तुतीकरण किया गया।

गया। तथा देश में सब्जी खाद्यात्र तेल की उपलब्धता को बढ़ाने के संबंध में बहुआयामी शोध की जानकारी देते हुए तेलों की तेलों की गुणवत्ता एवं तेलों के कम प्रयोग के बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ मंगला राय पूर्व महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, डॉ अरविंद कुमार पूर्व कुलपति केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी, राष्ट्रीय डेयरी विकास के चेयरमैन मनीष शाह, भारत सरकार के ग्राम विकास के निदेशक श्री मनोज आहूजा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक तिलहन एवं डॉ संजीव गुप्ता तथा हैदराबाद के तिलहन संस्थान के निदेशक डॉ आरके माथुर एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपना बहुमूल्य व्याख्यान दिया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण बिंदु राई सरसों की अंतर्राष्ट्रीय सेटेलाइट सिंपोजियम पर रहा। जिसमें कृषि

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

24, एटा से प्रकाशित, मंगलवार, 24 जनवरी, 2023 पृष्ठ : 8

अलीगढ

रह

सब्जी तेलों पर हैदराबाद में संपन्न हुआ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, सीएसए के वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए उत्कृष्ट शोध पत्र

(अनवर अशरफ) कानपुर (रहस्य संदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉक्टर महक सिंह ने बताया कि सब्जी तेलों की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2020–23 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इंडियन सोसायटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद एवं भारतीय संस्थान सोयाबीन इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 जनवरी से 21 जनवरी– 2023 तक भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद (तेलंगाना) में आयोजित की गई। इस पांच दिवसीय सम्मेलन में 18 विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें राई, सरसों,सोयाबीन,सूरजमुखी, अंडी, अलसी, नाइजर एवं तिलहन वृक्षों पर देश–विदेश के जाती आप हमने प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतिभाग किया गया। तथा देश में सब्जी खाद्यान्न तेल की उपलब्धता को बढ़ाने के संबंध में बहुआयामी शोध की जानकारी देते हुए तेलों की तेलों की गुणवत्ता एवं तेलों के कम प्रयोग के बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ मंगला राय पूर्व महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, डॉ अरविंद कुमार पूर्व कुलपति केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी, राष्ट्रीय डेयरी विकास के चेयरमैन मनीष शाह, भारत सरकार के ग्राम विकास के निदेशक श्री मनोज आहूजा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक तिलहन एवं डॉ संजीव गुप्ता तथा हैदराबाद के तिलहन संस्थान के निदेशक डॉ आरके माथुर एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपना बहुमूल्य व्याख्यान दिया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण बिंदु राई सरसों की अंतर्राष्ट्रीय सेटेलाइट सिंपोजियम पर रहा। जिसमें कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ महक सिंह प्रोजेक्ट लीडर राई–सरसों एवं अन्य देश एवं विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा दल के सदस्य के रूप में इस सम्मेलन में प्रतिभाग कर राई सरसों तेल पर विस्तृत चर्चा की गई महक सिंह द्वारा बताया गया कि प्रथम प्रजाति आरती 11 वर्ष 1936 में कानपुर संस्थान द्वारा विकसित की गई तथा वर्ष 1936 से लेकर वर्ष 2023 तक 33 जातियों का विश्वविद्यालय द्वारा विकास कर भारत सरकार से जनक बीज उत्पादन हेतु उचित कराया जा चुका है इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिक डॉ डीके सिंह एवं तिवारी द्वारा प्रभाकर अपना प्रस्तुतीकरण किया गया।

सीएसए के वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए उत्कृष्ट शोध पत्र

स्वतंत्र भारत संवाददाता

कानपुर । सीएसए के निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉक्टर महक सिंह ने बताया कि सब्जी तेलों की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इंडियन सोसायटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद एवं भारतीय संस्थान सोयाबीन इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 जनवरी से 21 जनवरी तक भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद ,तेलंगानाद्ध में आयोजित की गई। इस पांच दिवसीय सम्मेलन में 18 विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें राईए सरसोंएसोयाबीनएमूरजमुखीए अंडीए अलसीए नाइजर एवं तिलहन वृक्षों पर देश.विदेश के जाती आप हमने प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफ्लाइन प्रतिभाग किया गया। तथा देश में सब्जी खाद्यान्न तेल की उपलब्धता को बढ़ाने के संबंध में बहुआयामी शोध की जानकारी देते हुए तेलों की तेलों की गुणवत्ता एवं

तेलों के कम प्रयोग के बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई।

इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ मंगला राय पूर्व महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्लीए डॉ अरविंद कुमार पूर्व कुलपति केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसीए राष्ट्रीय डेयरी विकास के चेयरमैन मनीष शाहए भारत सरकार के ग्राम विकास के निदेशक मनोज आहूजा आईसीएआर के सहायक महानिदेशक तिलहन एवं डॉ संजीव गुप्ता तथा हैदराबाद के तिलहन संस्थान के निदेशक डॉ आरके माथुर एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपना बहुमूल्य व्याख्यान दिया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण बिंदु राई सरसों की अंतर्राष्ट्रीय सेटेलाइट सिंपोजियम पर रहा।

जिसमें कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ महक सिंह प्रोजेक्ट लीडर राई.सरसों एवं अन्य देश एवं विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा दल के सदस्य के रूप में इस सम्मेलन में प्रतिभाग कर राई सरसों तेल पर विस्तृत चर्चा की गई महक सिंह द्वारा बताया गया कि प्रथम प्रजाति आरती 11 वर्ष 1936 में कानपुर संस्थान द्वारा विकसित की गई तथा वर्ष 1936 से लेकर वर्ष 223 तक 33 जातियों का विश्वविद्यालय द्वारा विकास कर भारत सरकार से जनक बीज उत्पादन हेतु उचित कराया जा चुका है इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिक डॉ डीके सिंह एवं तिवारी द्वारा प्रभाकर अपना प्रस्तुतीकरण किया गया।

सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत नहीं दिए... 12

वन-वन में राम भटकते हैं सिया गयी तो कहां गयी 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 104
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
मंगलवार | 24 जनवरी, 2023

सीएसएयू के वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इंडियन सोसायटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद एवं भारतीय संस्थान सोयाबीन इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में हुए सब्जी तेलों की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2020-23 में सीएसएयू के वैज्ञानिकों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इस पांच दिवसीय सम्मेलन में 18 विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण बिंदु राई सरसों की अंतर्राष्ट्रीय सेटेलाइट सिंपोजियम पर रहा। जिसमें कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ.महक सिंह प्रोजेक्ट लीडर राई-सरसों एवं अन्य देश एवं विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा दल के सदस्य के रूप में इस सम्मेलन में प्रतिभाग कर राई सरसों तेल पर चर्चा की गई। सम्मेलन में विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिक डॉ. डी. के. सिंह एवं प्रभाकर तिवारी द्वारा अपना प्रस्तुतीकरण किया गया।

सीएसए के वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किए उत्कृष्ट शोध पत्र

कानपुर । सीएसए के निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉक्टर महक सिंह ने बताया कि सब्जी तेलों की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इंडियन सोसायटी आफ तिलहन अनुसंधान हैदराबाद एवं भारतीय संस्थान सोयाबीन इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17 जनवरी से 21 जनवरी तक भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद (तेलंगाना) में आयोजित की गई। इस पांच दिवसीय सम्मेलन में 18 विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें राई, सरसों,सोयाबीन,सूरजमुखी, अंडी, अलसी, नाइजर एवं तिलहन वृक्षों पर देश-विदेश के जाती आप हमने प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतिभाग किया गया। तथा देश में सब्जी खाद्यान्न तेल की उपलब्धता को बढ़ाने के संबंध में बहुआयामी शोध की जानकारी देते हुए तेलों की तेलों की गुणवत्ता एवं तेलों के कम प्रयोग के बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ मंगला राय पूर्व महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, डॉ अरविंद कुमार पूर्व कुलपति केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी, राष्ट्रीय डेयरी विकास के चेयरमैन मनीष शाह, भारत सरकार के ग्राम विकास के निदेशक मनोज आहूजा आईसीएआर

के सहायक महानिदेशक तिलहन एवं डॉ संजीव गुप्ता तथा हैदराबाद के तिलहन संस्थान के निदेशक डॉ आरके माथुर एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा अपना बहुमूल्य व्याख्यान दिया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख आकर्षण बिंदु राई सरसों की अंतर्राष्ट्रीय सेटेलाइट सिंपोजियम पर रहा। जिसमें कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ महक सिंह प्रोजेक्ट लीडर राई-सरसों एवं अन्य देश एवं विदेश के वैज्ञानिकों द्वारा दल के सदस्य के रूप में इस सम्मेलन में प्रतिभाग कर राई सरसों तेल पर विस्तृत चर्चा की गई महक सिंह द्वारा बताया गया कि प्रथम प्रजाति आरती 11 वर्ष 1936 में कानपुर संस्थान द्वारा विकसित की गई तथा वर्ष 1936 से लेकर वर्ष 2023 तक 33 जातियों का विश्वविद्यालय द्वारा विकास कर भारत सरकार से जनक बीज उत्पादन हेतु उचित कराया जा चुका है इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के कोट वैज्ञानिक डॉ डीके सिंह एवं तिवारी द्वारा प्रभाकर अपना प्रस्तुतीकरण किया गया।

अमर उजाला कानपुर 24/01/2023

सीएसए लगाएगा मोटे अनाज के व्यंजनों की प्रदर्शनी

कानपुर। सीएसए मोटे अनाज से बने 25 व्यंजनों की प्रदर्शनी मार्च में लगाएगा। इन्हें छात्राएं और गृह विज्ञान विभाग की प्रोफेसर बनाएंगी। निदेशक शोध डॉ. विजय यादव ने बताया कि सरकार इस साल को मोटा अनाज वर्ष के रूप में मना रही है। इसी क्रम में मोटे अनाज से व्यंजन बनाकर प्रदर्शित किए जाएंगे।